Alternatives India
VIKALP sangam

पश्चिमी हिमालय में महामारी से मुकाबला

खंड - 3

साधारण लोगों के असाधारण कार्यः
महामारी व तालाबंदी से परे

फरवरी 2021

क्रम सूची

परिचय
पश्चिमी हिमालय पर नज़र क्यों? 01

1. **बागेश्वर की कहानी**
प्रवासी मजदूरों ने किया बागेश्वर स्कूल का पुनरुद्धार 04

2. **उत्तराखंड की महिला उमंग समिति**
महिला उमंग समिति ने दिखाई राह 07

3. **प्रकृति मार्गदर्शक कार्यक्रम**
महामारी में सीखनाः उत्तराखंड में युवा प्रकृति मार्गदर्शक 09

4. **ओवरलेंड एस्केप**
लद्दाख में पर्यटन कंपनी बनी घर पहुंच सेवा का माध्यम 11

5. **मुनस्यारी के लोग**
मुनस्यारी के लोगों ने दिखाया, महामारी का सामना कैसे करें 13

6. **स्पीति के लोग**
महामारी का सामना स्पीति ने किया स्वशासन से 16

7. **पीपल्स साइंस इंस्टीट्यूट**
उत्तराखंड की महिलाओं ने किया जलस्रोतों को पुनर्जीवित 19

8. **स्नो लेपर्ड कन्ज़र्वेंसी सहयोग मेरु और हनुपट्टा के गांवों में**
प्रवासी मजदूर व महिलाओं की टिकाऊ जीवन की राह 22

9. **कांगड़ा की किशोरी लड़कियां**
महामारी में किशोरी लड़कियों की कहानियां 24

10. **पर्यावरणीय पर्यटन के रूप में कश्मीर के पक्षी**
बर्ड्स ऑफ़ कश्मीर बने पर्यटन व टिकाऊ आजीविका का माध्यम 27

परिचय

पश्चिमी हिमालय पर नज़र क्यों?

भारतीय हिमालय क्षेत्र में 12 राज्य शामिल हैं, जबकि पश्चिमी हिमालय हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, लद्दाख, जम्मू-कश्मीर तक फैला हुआ है। यहां 51 मिलियन (5.1 करोड़) आबादी निवास करती है। इस क्षेत्र में वनस्पति व जीव-जंतुओं की काफी विविधता है। यह क्षेत्र भारतीय महाद्वीप के बड़े हिस्से को न केवल पानी उपलब्ध कराता है बल्कि ऊंची चोटियां, विशाल भूदृश्य और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत यहां की पहचान है।

यहां के पहाड़ जलवायु बदलाव के त्वरित संकेत हैं। घटते हिमनद (ग्लेशियर) नदियों के प्रवाह में बदलाव करते हैं और इसके साथ जैव- विविधता में और लोगों की आजीविका में बदलाव आता है। और कुल मिलाकर, इस सबसे उनकी बेहतरी भी प्रभावित होती है। जलवायु बदलाव,भूमि का खराब होते जाना, अत्यधिक दोहन और प्राकृतिक आपदाओं के कारण हिमालयी राज्य, दुनिया में सबसे अधिक वंचित इलाकों में से एक हैं।

पहाड़ आवागमन को कठिन बनाते हैं। जानकारियों का आदान- प्रदान भी आसान नहीं है, व्यवस्थित रूप से जानकारी प्राप्त करना भी पहाड़ों में कठिन है। इंटरनेट धीमा चलना, डिजीटल दूरी के साथ साथ दूरदराज के इलाकों में समस्याएं बढ़ती जाती हैं। यह कहा जाता है कि दक्षिण एशिया में पहाड़ के हर तीसरे व्यक्ति में से एक व्यक्ति गरीबी और खाद्य असुरक्षा की चपेट में है।

इस क्षेत्र में पर्यटन की शुरूआत ब्रिटिश हुकूमत स्थापित होने के साथ हुई, जब उन्होंने हिल स्टेशन और समर रिसोर्ट बनाए। जैसे नैनीताल, मसूरी, शिमला इत्यादि, जो आज बड़े पर्यटन स्थल के रूप में उभर चुके हैं। इस क्षेत्र में बहुत से तीर्थस्थल हैं। जैसे बदरीनाथ, चार धाम, केदारनाथ इत्यादि। इस क्षेत्र में पर्यटन की अत्यधिक संभावनाएं हैं, पर महत्वपूर्ण सवाल टिकाऊपन, वहन क्षमता और पर्यावरण के अनुकूल पर्यटन का है।

इसके अलावा, सबसे बड़ी चिंता का विषय कचरा प्रबंधन है और बढ़ती पर्यटकों की संख्या के नतीजे के रूप में प्लास्टिक का इस्तेमाल बढ़ना है। इस सबके मद्देनजर समुदाय आधारित पर्यटन एक टिकाऊ विकल्प दिखाई देता है, जहां होमस्टे से ग्रामीण समुदायों की आय बढ़ सकती है।

अधिकांश भारत की तरह, हिमालय क्षेत्र भी मोटे तौर पर कृषि पर निर्भर है। हालांकि कृषि के व्यवसायीकरण और बढ़ते वृक्षारोपण ने स्थानीय समुदायों को उनके मूल आधार से काफी अलग-थलग कर दिया है। इस क्षेत्र में पशुपालक और ऋतु प्रवास ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण आर्थिक गतिविधि रहे हैं। सम्पत्ति अधिकार और वन कानूनों के आने के बाद बहुत से पशुपालक समुदाय जैसे वन गुर्जर, कई तरह के अधिकारों से वंचित हो गए। वे बिना वोट के अधिकार, बिना बिजली और बिना घर के बेघर हो गए। जंगल आधारित समुदाय लगातार वंचित हो रहे हैं और उन्हें अक्सर अवैध बाशिन्दे की तरह माना जाता है। राज्य और केन्द्र की कोशिश होती है कि उन्हें बसाया दिया जाए और उनकी आवाजाही को रोका जाए।

चुनौतियां

इस क्षेत्र में कई चुनौतियां हैं- जैसे दुर्गम व पहुंचविहीन स्थान, दूरदराज का इलाका, प्राकृतिक आपदाओं की संवेदनशीलता, जलवायु बदलाव का नाजुकपन, गैर टिकाऊ पर्यटन और कचरा प्रबंधन, जैव विविधता का बढ़ता नुकसान, आजीविका के अभाव में बढ़ती बेरोजगारी। इसी के साथ बड़े पैमाने पर गांवों से युवाओं का पलायन करना, जिससे गांव भुतिहा (सूने) हो रहे हैं। और खाद्य सुरक्षा का मुद्दा भी है। ताजा अध्ययन बताता है कि यह क्षेत्र प्राकृतिक आपदाओं के लिए संवेदनशील है, जैसे बाढ़, भूस्खलन, और सूखा। यहां कुछ गैर जलवायु मुद्दे भी हैं- मानव- वन्यप्राणियों में टकराव, जलस्रोतों के सूखने से पानी की समस्या, भूमि अवक्रमण (खराब होना), सामाजिक और जनसांख्यिकीय बदलाव होना इत्यादि। कुछ लिंग व सामाजिक पहचान से जुड़े मुद्दे भी हैं। उदाहरण के तौर पर यहां पारंपरिक रूप से पहाड़ी समाज कृषि में बढ़ते नारीवाद का गवाह है। इसके बावजूद महिलाओं को सम्पत्ति का अधिकार नहीं मिला है। बड़े पैमाने पर पुरुषों का बाहरी पलायन होने के कारण खेती की अधिकांश जिम्मेदारी महिलाओं पर आ गई है, वह भी बिना किसी सामाजिक, आर्थिक व कानूनी सहयोग के।

पश्चिमी हिमालय विकल्प संगम और सामूहिक हिमालय

वृहतर विकल्प संगम का एक हिस्सा है पश्चिमी हिमालय विकल्प संगम, जो शोधकर्ताओं, कार्यकर्ताओं, विचारकों व अन्य लोगों का एक साझा मंच है। इसमें न केवल ऐसे संगठन, समूह व व्यक्ति जुड़े हैं, जो हिमालय में वैकल्पिक काम कर रहे हों, बल्कि जो इसके परे जाकर हिमालयी राज्यों के वैकल्पिक भविष्य की समझ बनाने के लिए एक साथ मिलकर काम कर रहे हों। इस दिशा में पहली बैठक वर्ष 2016 के अगस्त महीने में हिमाचल प्रदेश के पालमपुर में हुई थी। इस विकल्प संगम का आयोजन संभावना, जागोरी दीर पार्क, और कल्पवृक्ष ने संयुक्त रूप से किया था जिसमें 10 संस्थाओं के 25 प्रतिभागी शामिल हुए थे। दूसरी बैठक हिमाचल प्रदेश के जागोरी परिसर में वर्ष 2018 के नवंबर महीने में हुई थी, जिसे जागोरी ग्रामीण, पीपुल्स साइंस इंस्टीट्यूट, स्नो लेपर्ड कंसरवेंसी- इंडिया ट्रस्ट, लद्दाख आर्ट, और मीडिया आर्गनाइजेशन (LAMO), संभावना,मूल, (MOOL), सस्टेनेबिलिटी एंड रिसर्च सेंटर, तितली ट्रस्ट, माटी कलेक्टिव, सेडेड (SADED), स्कूल फार रूरल डेवलपमेंट एंड एनवायरनमेंट और कल्पवृक्ष आदि ने संयुक्त रूप से आयोजित किया था।

पश्चिमी हिमालय विकल्प संगम (WHVS) का उद्देश्य लोगों व संस्थाओं के नेटवर्क को मजबूत करना और विकास के वैकल्पिक नजरिए की दिशा में मिलकर काम करना है। डब्ल्यू. एच. वी. एस. की मान्यता है कि समावेशी विकास की दृष्टि की जरूरत है। यहां पर्यावरणीय टिकाऊपन, सामाजिक बेहतरी और न्यायपूर्ण, प्रत्यक्ष और प्रतिनिधि लोकतंत्र, आर्थिक लोकतंत्र, और सांस्कृतिक विविधता और ज्ञान लोकतंत्र की जरूरत है।

वर्ष 2019 में पश्चिमी हिमालय विकल्प संगम में हिमालय कलेक्टिव का मुद्दा उभरा। यह पश्चिमी हिमालय में रहने व साथ काम करनेवाले व्यक्तियों व संस्थाओं के लिए एक खुला मंच है। कलेक्टिव चाहता है कि असमान जानकारी की दूरी को पाटा जाए और इसका उद्देश्य इस पर्वतीय क्षेत्र में सभी लोगों की जानकारी तक पहुंच हो, जानकारी प्राप्त करने के मौके हों।

तालाबंदी और तालाबंदी की कहानियां

जब कोविड-19 की महामारी ने दुनिया पर आक्रमण किया तो इस क्षेत्र की कमियां उजागर हुई। स्कूल और सार्वजनिक स्थान तहस-नहस हो गए क्योंकि प्रवासी मजदूरों का आना शुरू हो गया, जो सिलसिला लंबा चला। जो बाकी बचे, उनका फिर से आना जारी रहा। पर्यटन रुक गया। और युवाओं ने उनकी आजीविका को खो दिया। यह सोचनेवाली बात है कि जिस क्षेत्र में सबसे ज्यादा लोगों की आजीविका पर्यटन आधारित है, वहां वैश्विक महामारी के कारण इस पर रोक लगी, क्योंकि आवाजाही पर पाबंदी थी। वैश्विक स्तर पर पर्यटन को बड़ा नुकसान हुआ। पश्चिमी हिमालय क्षेत्र में पर्यटन उद्योग और समुदाय आधारित पर्यटन काफी फल फूल रहा था, आकस्मिक महामारी से लोगों की आजीविका चली गई और पर्यटन तहस-नहस हो गया। लेकिन अब फिर से इसे खड़ा करने की कोशिशें जारी हैं, इस दिशा में आगे बढ़ भी रही हैं।

इस दस्तावेज में हमने कोशिश की है ऐसी प्रेरणादायक कहानियों को संकलित करने की जो इस क्षेत्र में दृढ़ता और संकल्प दिखाती हैं। जब बाढ़ ने एक गांव के स्कूल को नष्ट कर दिया था, स्थानीय लोगों और प्रवासी मजदूरों ने उस स्कूल का पुनरुद्धार किया। जब पर्यटन रुक गया, तो एक पर्यटन संचालक ने घर-घर जाकर उनके कर्मचारियों को राशन सामग्री वितरित की। अन्य समुदायों ने जीवन निर्वाह के लिए खेती की और इंटरनेट व मोबाइल के माध्यम से चीजों को समझने (डिजीटल लिटरेसी) पर जोर दिया। यह कहानियां उम्मीद की किरण हैं, सामुदायिक काम और सहयोग से यह कठिन समय निकल जाएगा और रूकावटें दूर होंगी।

संपर्क

कहानी के बारे में सामान्य जानकारी- आद्या सिंह- aadyasingh@gmail.com or aadya@iabtfoundation.org और ऋतविका पतगिरी, ritwikapatgiri5@gmail.com

1. बागेश्वर की कहानी

प्रवासी मजदूरों ने किया बागेश्वर स्कूल का पुनरुद्धार

फोटो सौजन्य आदर्ष कृष्णन

शहरी जीवन में झंझट,शोर व हलचल आम है, पर गरूर गंगा के किनारे गांव के लिए यह सच नहीं है। हिमालय में उत्तराखंड के गरूर प्रखंड का सिमखेत गांव इतना खुशकिस्मत नहीं है। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, मुंबई (इंडियन इंस्टीट्यूट आफ टेक्नोलाजी, बाम्बे) और नेशनल इंस्टीट्यूट आफ हाइड्रोलाजी के ताजा शोध में जलवायु परिवर्तन के कारण भारत का वर्षा क्रम बदल रहा है। हिमालय क्षेत्र हमेशा से ही जलवायु परिवर्तन के प्रभाव से अतिसंवेदनशील व असुरक्षित रहा है। वैज्ञानिक विश्लेषण बताता है कि इससे अत्यधिक वर्षा होगी और नदियों में बाढ़ आएगी। पिछले वर्ष 2019 के नवंबर महीने में यहां बाढ़ आई और सरस्वती शिशु मंदिर को बहा ले गई। पुस्तकालय को नुकसान पहुंचाया और चार कक्षाओं को तहस-नहस कर दिया। इस दुखद घटना के बावजूद बच्चे लगातार स्कूल आते रहे, क्योंकि उनके पास कोई और विकल्प नहीं था। आधिकारिक रूप से स्कूल के पुनरुद्धार की योजना थी, पर वह महामारी के चलते रुक गई।

महामारी का परिणाम

कोरोना वायरस आने के बाद तालाबंदी शुरू हो गई। स्कूल को क्वारंटीन सेंटर के रूप में इस्तेमाल किया गया, उन प्रवासी मजदूरों के लिए जो गांवों में लौटे थे। वे अनौपचारिक मजदूर के रूप में शहर व कस्बों में काम करते थे। उन्होंने यहां के टूटे-फूटे स्कूल की स्थिति देखी, इनमें से कुछ के बच्चे इसी स्कूल में पढ़ते थे, उन्हें यह देखकर अच्छा नहीं लगा और बच्चों का भविष्य अनिश्चित सा लगा। प्रवासी मजदूरों ने स्कूल के रंगरोगन व पुनरूद्धार का प्रस्ताव दिया। वह भी पूरी तरह श्रमदान से, बिना किसी मजदूरी के भुगतान के। इसके बाद, ग्रामीण व प्रवासी मजदूरों ने मिलकर तालाबंदी के समय का इस्तेमाल करते हुए स्कूल का पुनरुद्धार किया और इस काम के लिए कोई राशि भी खर्च नहीं हुई।

फोटो सौजन्य आदर्ष कृष्णन

आदर्श कृष्णन और पुष्कर बिस्ट दो दोस्त हैं, जो उत्तराखंड में कुछ समय से विकास के क्षेत्र में काम कर रहे हैं। दोनों ने तय किया कि वे स्थानीय स्कूल के पुनरुद्धार में मदद करेंगे। आदर्श, एवीडीएजेड (AVDAZ) के संस्थापक सदस्य हैं, जो छोटे व सीमांत किसानों के बीच काम करती है। जबकि पुष्कर स्थानीय हैं और उनके पूर्वजों ने स्कूल को जमीन दान में दी थी। यह वर्ष 1995 की बात है। और पुष्कर, भारतीय एग्रो इंडस्ट्रियल फाउंडेशन का हिस्सा हैं। उन्होंने देखा कि स्कूल में बाढ़ से हुए नुकसान को ठीक करने की जरूरत तो है ही, साथ ही उसमें बुनियादी ढांचे का भी अभाव भी है, उसे पूरा करना भी जरूरी है। पुष्कर ने कहा- "वर्ष 2019 की बाढ़ के बाद पूरा स्कूल कचरे से पट गया था, और इमारत को भी काफी नुकसान पहुंचा था।"

आदर्श ने कहा- "स्कूल में शिक्षकों को बैठने के लिए कुर्सी तक नहीं है।" जब प्रवासी मजदूर मरम्मत व पुनरुद्धार का काम करने लगे, और स्कूल परिसर में रहने लगे, तो स्कूल में बुनियादी ढ़ांचे को दुरुस्त करने व डिजिटलीकरण के काम को करने का उद्देश्य भी इसमें जुड़ गया। कृष्णन व बिस्ट ने इस लक्ष्य को पूरा करने की जिम्मेदारी ली।

आदर्श ने कहा-" यहां 20-25 किलोमीटर की परिधि में कोई भी स्कूल कम्प्यूटर शिक्षा नहीं देता है।" उन्होंने आगे कहा " शिक्षा और खेल दो ऐसे क्षेत्र हैं, जिनमें भविष्य की संभावनाएं हैं।" यहां अधिकांश बच्चे खो-खो खेलते हैं, अन्य खेलों के लिए कोई सामग्री व उपकरण नहीं है। अच्छी सोच से अच्छे काम के लिए कुछ कीमत अदा करनी पड़ती है। स्कूल की मरम्मत के काम को करने के लिए 4 लाख रूपए चाहिए थे। सरकार से सहयोग की कोशिश करने के बावजूद भी कोई मदद नहीं मिली। इसके लिए बेवसाइट के माध्यम से राशि जमा करने के लिए मिलाप नामक पेज बनाया गया और भारत और विदेशों के दानदाताओं से राशि देने की अपील की गई। इसके साथ काम शुरू हुआ। ग्रामीण और प्रवासी मजदूरों ने मेहनत से पूरी मरम्मत व रंगरोगन का काम उत्साह से किया।

प्रत्येक दिन जो भी नया समूह चाहता, स्कूल की मरम्मत के लिए आता, इसके लिए कोई निर्धारित समय व निर्धारित मजदूर तय नहीं थे। इसमें सभी जातियों के मजदूर थे और उन्होंने बच्चों के भविष्य की बेहतरी के लिए मिलकर काम किया। उन्होंने यह काम दृढ़ निश्चय व स्वप्रेरणा से पूरा किया। लगभग सभी मजदूर कृषि पर निर्भर थे, और वे उनके बच्चों का भविष्य, अच्छे स्कूल व अच्छी शिक्षा में देखते हैं। स्कूल में अब कम्प्यूटर, प्रोजेक्टर, प्रिंटर, अलमारी, खेल सामग्री, सफेद बोर्ड है, और सभी बच्चों को उपलब्ध है। इससे डिजिटलीकरण का उद्देश्य पूरा हुआ। यह सब उस राशि से हासिल हुआ, जो दानदाताओं से प्राप्त हुई थी।

सबक

प्रवासी मजदूरों के लिए तालाबंदी का समय बहुत कठिन था और हिमालय क्षेत्र में फिर से रोजी-रोटी के लिए मजदूरों का पलायन बहुत ज्यादा देखा गया। ऐसी स्थिति में यह एकमात्र स्कूल है जिसका प्रवासी मजदूरों ने पुनरुद्धार किया। तकनीक और उद्यमिता के ज्ञान के कारण इसके लिए राशि जुटाई जा सकी और इससे स्कूल का डिजिटलीकरण किया जा सका। जब महामारी में सभी निराश दिखाई देते थे तब स्कूल का पुनरुद्धार हुआ। कम्प्यूटर शिक्षा को बढ़ावा दिया गया, जिससे समुदाय में सकारात्मक बदलाव दिखाई दिया।

संपर्क

आदर्ष कृष्णन, adarshkrishnancivil@gmail.com

फोटो सौजन्य आदर्ष कृष्णन

2. उत्तराखंड की महिला उमंग समिति

महिला उमंग समिति ने दिखाई राह

फोटो सौजन्य कल्याण पॉल

पिछले कुछ वर्षों से हिमालय के नाजुक व कमजोर पर्यावरण ने यहां की टिकाऊ पर्वतीय खेती पद्धति पर नकारात्मक असर दिखाया है। इसका नतीजा हुआ है कि खाद्य सुरक्षा कम हुई है। इस क्षेत्र के युवा और पुरूषों का बाहरी पलायन बढ़ा है। कृषि का नारीकरण एक नया चलन है, जिसकी क्षेत्र में लहर है। इसका अर्थ है कृषि से ज्यादा से ज्यादा महिलाएं जुड़ रही हैं। महिला उमंग समिति कई स्वयं सहायता समूहों को मिलकर बनी है। इसमें खेती में रूचि रखनेवाली महिला किसान या ऐसी महिलाएं शामिल हैं, जो कई तरह की व्यावसायिक गतिविधियों से जुड़ी हैं। अब वे आर्थिक रूप से सक्षम हो गई हैं। इसे शुरू करने के पीछे सोच यह थी कि बचत को बढ़ावा दिया जाए और वित्तीय सेवाओं को महिलाओं तक पहुंचाने में वृद्धि हो। अन्यथा, वे परंपरागत बैंकिंग व्यवस्था से बाहर रहेंगी या उससे अनभिज्ञ रहेंगी। इसकी शुरूआत वर्ष 1999 में हुई, जिसमें नैनीताल, अल्मोड़ा और बागेश्वर के 100 गांवों की महिलाएं जुड़ी हैं।

महामारी का परिणाम

जब तालाबंदी शुरू हुई, उमंग की महिलाओं ने बातचीत शुरू की कि किस तरह महामारी की स्थिति का सामना किया जाए। पिछले कुछ वर्षों से उमंग के पास कठिन समय के लिए 10-12 लाख रूपए की बचत थी, और उसे वे हर साल महिलाओं में वितरित करते थे। उमंग की सदस्य सुनीता कश्यप ने कहा "हम जानते हैं इससे ज्यादा कठिन समय नहीं होगा।" इस बात पर सहमति बनी कि वे उनकी बचत के कुछ हिस्से को वितरित करेंगी। महामारी के दौरान 850 लोगों से 60 लाख रूपए आए।

रबी का मौसम शुरू होने का अर्थ बाजार के लिए नकदी फसल होना है। पर समस्या बाजार की थी, क्योंकि तालाबंदी के कारण बाजार बंद था। महिला किसान स्थानीय बाजार से जुड़ी।

फोटो सौजन्य सुनीता कश्यप

उन्होंने फोन व ईमेल के माध्यम से मदद करने की पेशकश की। फसल खरीदी में मदद करने का प्रस्ताव किया। लगभग 419 किसानों ने तय किया कि वे सहयोग करेंगी और 12.5 लाख रूपए से कृषि उत्पाद की खरीदी की गई। इसके बाद महिलाओं ने क्षेत्र के किस भाग में किस चीज की कमी है, इसकी जानकारी जुटाई। और इसमें पाया कि अलग-अलग इलाकों में अलग-अलग चीजों की जरूरत है। कुछ क्षेत्र में लहसुन और कुछ में राजमा की कमी थी। जब सभी बाजार बंद थे तब स्थानीय बाजार से सकारात्मक प्रतिक्रिया आई। महिलाओं ने उनके उत्पादों के सामान को घर घर जाकर पहुंचाया।

उमंग की महिलाओं का घर पर सामान व उत्पाद पहुंचाने का प्रभावी माडल है। उन्होंने वेबसाइट पर आनलाइन घर सामान पहुंचाने की सेवा शुरू की और उसका बहुत सकारात्मक परिणाम सामने आया।

सबक

वित्तीय और निर्णय प्रक्रिया की दृष्टि से महिलाओं की बढ़ती भागीदारी प्रभावी उपाय है। यह न केवल महिला सशक्तीकरण के लिए बल्कि दीर्घकालीन लाभ के लिए भी जरूरी है। इससे वित्तीय प्रबंधन व बचत के क्षेत्र में महिलाओं का क्षमतावर्धन हुआ है। इसका महत्वपूर्ण परिणाम भी आया है। इसमें महिलाओं की तकनीक और डिजीटल शिक्षा भी बहुत महत्वपूर्ण है।

संपर्क

सुनीता कश्यप, suneetakashyap18@gmail.com

फोटो सौजन्य आनंद अधिकारी

3. प्रकृति मार्गदर्शक कार्यक्रम

महामारी में सीखनाः उत्तराखंड में युवा प्रकृति मार्गदर्शक

फोटो सौजन्य केसर सिंह

वन कटाई के साथ कृषि उत्पादन भी घटता जा रहा है। इसलिए हिमालय के अधिकांश कृषि और जंगल आधारित समुदाय उनकी परंपरागत आजीविका से दूर होते जा रहे हैं। नतीजतन, इस क्षेत्र के युवाओं में रोजी-रोटी के लिए बाहरी पलायन और गरीबी बढ़ रही है। प्रकृति मार्गदर्शक कार्यक्रम, तितली ट्रस्ट व सेंटर फार इकोलाजी डेवलपमेंट रिसर्च (CEDAR) के संयुक्त सहयोग से शुरू हुआ है। प्रकृति मार्गदर्शक कार्यक्रम में प्रकृति और आजीविका को जोड़ने की पहल की गई है। विशेष तौर पर उत्तराखंड के तीन भूदृश्यों- मसूरी-बेनोग, झिलमिल झील-थानो, और मुक्तेश्वर, में इसकी पहल की गई है, जो वर्ष 2019 के अक्टूबर से शुरू हुई है। इसका उद्देश्य उत्तराखंड के तीन गांव समूह में योग्य व समर्पित प्रकृति मार्गदर्शक तैयार करना है, जो ईको फ्रेंडली टूरिज्म, यानी पर्यावरण अनुकूल पर्यटन, जो समुदाय में पर्यावरणीय व आर्थिक रूप से टिकाऊ आजीविका को बढ़ावा दे।

अधिकांश प्रशिक्षणार्थी ऐसे परिवारों से आते हैं जो प्रकृति मार्गदर्शक को ऐसे मौके के रूप में देखते हैं, जो उनकी कृषि व गैर कृषि गतिविधियों के अलावा पूरक आय में बढ़ोतरी करे। इनमें से ज्यादातर खेती-किसानी के काम में जुड़े हैं या गैर कृषि काम में जैसे परिवहन व आतिथ्य के काम में संलग्न हैं। वे उत्तराखंड में प्रकृति से जुड़ी इस आजीविका के लिए उत्साहित हैं, जिसकी उनको पेशकश की गई है। महामारी के पूर्व आमतौर पर प्रशिक्षण का प्रत्येक सत्र 3- 4 घंटे का होता था। यह अवलोकन यात्रा 2-3 सप्ताह में होती थी। इस यात्रा में पक्षियों की पहचान और अन्य प्राकृतिक इतिहास के मुद्दों पर बात होती थी। प्रशिक्षणार्थियों को यह भी सिखाया जाता था कि पौधे व जानवरों की पहचान के लिए किस तरह मार्गदर्शिका का इस्तेमाल करना है।

महामारी के पूर्व, वर्ष 2019 के अक्टूबर में प्रशिक्षणार्थियों की कार्यशाला आयोजित हुई थी। महामारी के पहले तक, वर्ष 2020 के मार्च महीने के पहले तक यह आवासीय कार्यशाला और

फोटो सौजन्य केसर सिंह

प्रशिक्षण कार्यक्रम चलता रहा। जब यह महामारी मनुष्यों में आ गई तब यह सिलसिला रुक गया।

महामारी का परिणाम

जब महामारी की शुरूआत हुई, दूसरी अन्य जगहों की तरह यहां भी पर्यटन मार्च के मध्य तक बंद हो गया। हालांकि प्रकृति मार्गदर्शक कार्यक्रम नहीं रुका। तालाबंदी के शुरूआती 3 महीने कोई प्रायोगिक सत्र व प्रशिक्षण नहीं हुआ। हालांकि प्रशिक्षण व सीखना जारी रहा। यद्यपि प्रतिभागी मध्य मार्च से जून तक शारीरिक रूप से आपस में नहीं मिले। पर आभासी प्रशिक्षण जारी रहा। नवाचार व सृजनशीलता के माध्यम से प्रकृति समझना और सीखना संभव है, भले ही आपस में साथ मिलना संभव न हो।

"पहले हमारा जोर पक्षी निरीक्षण पर था, पर अब समय बदल रहा है। अब हमारा पौधों, वनस्पति और तितलियों पर जोर है," केसर सिंह ने कहा, जो प्रकृति मार्गदर्शक कार्यक्रम से वर्ष 2014-15 से संबद्ध हैं। केसर सिंह और तौकीर आलम लोधा, जो क्रमशः मसूरी और झिलमिल भूदृश्य में हैं। सिंह और तौकीर दोनों स्थानीय हैं, उनके पास विस्तृत जानकारी है और वे स्रोत व्यक्ति के रूप में काम करते हैं। उनका प्रतिभागियों से लगातार संपर्क वाट्सएप समूह के द्वारा रहता है।

केसर सिंह ने कहा- " अब हम शारीरिक रूप से आपस में नहीं मिल पाते, पर हमारा शिक्षण व जानकारियों का आदान-प्रदान जारी रहता है। कभी-कभी मैं अपने कैमरे से फोटो लेता हूं और समूह में अपलोड कर देता हूं। कभी इंटरनेट से डाउनलोड कर लेता हूं। यह प्रक्रिया रुकती नहीं है, जारी रहती है।"

कभी प्रशिक्षणार्थी पूछते हैं पक्षियों की सूची पोस्ट करने के बारे में, जिनकी गिनती उन्होंने घर के आंगन में की थी। और पक्षी, पौधों और तितलियों की फोटो के बारे में, जिनका निरीक्षण उन्होंने गांव में किया था। आभासी वाट्सएप समुदाय, पक्षियों की पहचान, तितलियां और ऋतु जैविक की पहेली को सुलझाने में व्यस्त है।

सबक

प्रकृति आधारित आजीविका को आभासी दुनिया से भी जोड़ा जा सकता है। स्थानीय ज्ञान, उचित तकनीक के साथ सृजनात्मकता और इंटरनेट की पहुंच इसके लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

संपर्क

केसर सिंह- 8477091851

4. ओवरलेंड एस्केप

लद्दाख में पर्यटन कंपनी बनी घर पहुंच सेवा का माध्यम

फोटो सौजन्य टुंडप दोरजे

ओवरलेंड एस्केप की स्थापना टुंडप दोरजे ने की, जिनका उद्देश्य घरेलू पर्यटकों को आकर्षित करना था। यह लद्दाख में पहली कंपनी थी जिसका लक्ष्य घरेलू पर्यटक था, बजाय विदेशी पर्यटकों के। क्षेत्र में समाचार पत्र नहीं होने के कारण इस समूह ने गैर लाभ का समाचार पत्र शुरू किया, जिसका नाम *रीच लद्दाख बुलेटिन* रखा गया। और यह पिछले 8 वर्षों से प्रकाशित हो रहा है। ओवरलेंड एस्केप कंपनी द्वारा समाचार पत्र के कर्मचारियों को वेतन दिया जाता था। इससे समाचार पत्र व कंपनी दोनों को मिलाकर लगभग 45 लोगों को प्रत्यक्ष तौर रोजगार मिला था। इसके अलावा, दोनों से करीब 150 लोगों को अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार मिलता था। पर जब महामारी का आक्रमण हुआ, एजेंसी बड़े नुकसान से गुजरने लगी। इस एजेंसी की बहुत बड़ी राशि एयरलाइन पैकेज में निवेश की हुई थी, वह राशि वापस नहीं मिली। लेकिन कहा गया कि इस राशि को भविष्य में टिकट खरीदी में इस्तेमाल कर सकते हैं। इसमें लगभग दो साल और लगेंगे जब पूरी राशि वापस आ सकेगी। पर्यटन लद्दाख में सबसे बड़ा उद्योग है, और यह एक दिन में नहीं बना है। इसमें कई साल लगे हैं जब लद्दाख इस मुकाम पर पहुंचा है।

महामारी का परिणाम

कोविड-19 की महामारी ने पर्यटन क्षेत्र को पूरी तरह तहस-नहस कर दिया और जो हजारों लोग इस पर निर्भर थे, उन्होंने उनकी आजीविका खो दी। विशेष तौर पर यह लद्दाख के लिए सच है, जिसने हाल के कुछ सालों में पर्यटन में तेजी देखी थी। ओवरलेंड एस्केप को भी इसका जल्दी एहसास हो गया कि यह उनके और उनके कर्मचारी के लिए टिकाऊ नहीं हो सकता है।

फोटो सौजन्य टुंडप दोरजे

"कौन जानता है कि कितने साल लगेंगे, वहां पहुंचने में जहां हम महामारी की शुरूआत से पहले थे", दोरजे ने कहा। वे ओवरलेंड एस्केप और रीच लद्दाख के कर्मचारियों की अनिश्चतता से वाकिफ थे, इनमें से ज्यादातर के पास आजीविका का कोई वैकल्पिक स्रोत नहीं है। " मैं उनसे यह कह सकता था कि हमारे पास व्यवसाय नहीं है, मैं अब आपको भुगतान नहीं कर सकता" दोरजे ने याद किया। "पर उनके पास कोई दूसरा विकल्प नहीं था। इसलिए हमें उनके लिए कुछ और सोचना था।"

जिला मजिस्ट्रेट और लद्दाख हिल काउंसिल की ओर से यह बात सामने आई कि दिल्ली से सब्जियां और दवाईयां को वितरित करना है। दोरजे को एहसास था कि उनके पास मानवशक्ति और वाहन हैं, जिनसे इनका वितरण किया जा सकता है। "हमारे पास पैसे नहीं हैं, पर हमारे पास मानवशक्ति है" दोरजे ने कहा। जल्दी ही फोन की घंटी बिना रूके बजने लगी, वितरण व्यवसाय बढ़ने-पनपने लगा। लद्दाख में घर पहुंच सेवा लगभग अनजानी है। दूरस्थ व पहाड़ी भूभाग के कारण, इस क्षेत्र में घर पहुंच सेवा का अभाव था। लेकिन महामारी ने इस व्यवसाय का महत्व बताया।

इस पर पूंजी लगाकर दोरजे और उनकी टीम ने पंजाब और दिल्ली से सब्जियों की आपूर्ति की, घर पहुंच सेवा शुरू की। उन्होंने उनकी घर पहुंच सेवा को गोरत्सा नाम दिया। इसका पंजीयन प्राप्त किया। और इस सेवा के लिए बेवसाइट बनाई। कमीशन के साथ किराने की दुकान शुरू हुई। सभी 45 कर्मचारियों के लिए जीविकोपार्जन के लिए यह व्यवसाय पर्याप्त व सक्षम था।

सबक

महामारी के दौरान पर्यटन सबसे बड़े हमले का शिकार हुआ। मानवशक्ति, कौशल, और तकनीक का नया विचार था इसे बनाए रखने के लिए, जिस पर अमल किया गया। नवाचार और छोटे स्तर पर वितरण सेवा की पेशकश ने आजीविका मुहैया कराई। बाजार व संचार के लिए डिजीटल तकनीक और इंटरनेट का इस्तेमाल भी प्रभावी रहा।

संपर्क

टुंडप दोरजे, tundupdorjey@gmail.com

5. मुनस्यारी के लोग

मुनस्यारी के लोगों ने दिखाया महामारी का सामना कैसे करें

फोटो सौजन्य बीना नितवाल

माटी महिलाओं का सामूहिक संगठन है, जो हिमालय की गोरी घाटी में कार्यरत है। मुनस्यारी,उत्तराखंड के पिथौरागढ़ जिले में स्थित है। माटी एक स्वायत्त संगठन है, जिसमें महिला किसान, बुनकर, दूध उत्पादक, सब्जी विक्रेता और स्वरोजगार से जुड़े उद्यमी शामिल हैं। यहां के समुदाय मुख्यतः कृषि पर निर्भर हैं। इसके अतिरिक्त, पर्यटन पर भी उनकी आजीविका निर्भर है। माटी की शुरूआत गहरी राजनैतिक समझ से हुई, और गांव की महिलाओं का पितृसत्तात्मकता से जुड़े मुद्दों पर संघर्ष से हुई। जैसे महिलाओं के खिलाफ हिंसा, घरेलू, यौन हिंसा और जाति आधारित हिंसा इत्यादि। इसके साथ ही, भूमि पर गैरबराबरीपूर्ण मालिकाना हक और अन्य उत्पादक स्रोतों पर महिलाओं के साथ गैरबराबरीपूर्ण व्यवहार, और उससे जुड़े जल, जंगल, जमीन के मुद्दे भी उठाए।

माटी ने व्यक्तिगत मुद्दों से परे हटकर महिलाओं को समर्थ बनाने के सतत् कार्यक्रम चलाए। उनकी सक्रिय भागीदारी से स्थानीय स्तर पर स्वशासन और जनकेंद्रित विकास के कार्य किए, जिसका संदर्भ हिमालय के लिए पर्यावरण के अनुकूल हो। एक व्यवस्थित समाज में अंतर्निहित है गांव की अर्थव्यवस्था, और माटी का काम इस दिशा में प्रत्यक्ष और हस्तक्षेप करनेवाला रहा है। माटी के सदस्य, हिमालयन आर्क के भी हिस्सा हैं, जो वर्ष 2004 में बना। वर्ष 2016 में पंजीकृत हुआ। हिमालयन आर्क सांस्कृतिक रूप से अपने अनुभव होमस्टे के माध्यम से पर्यटकों के साथ साझा करता है। एक प्रकृति और समुदाय आधारित पर्यटन उद्यम के रूप में स्थापित हिमालयन आर्क स्थानीय जंगलों के संरक्षण और कल्याण के लिए सक्रिय रूप से योगदान देता है और महिलाओं के लिए आय का एक अतिरिक्त स्रोत प्रदान करता है।

फोटो सौजन्य बीना नितवाल

महामारी का परिणाम

महामारी और उसके बाद तालाबंदी ने दुनिया भर में पर्यटन को चोट पहुंचाई है। पर्यटन आधारित मुनस्यारी समुदाय के लिए भी यह अनुभव अलग नहीं था। समुदाय ने देखा कि तालाबंदी के कारण उनकी आय कम हो रही है। "यहां महामारी और तालाबंदी के बीच में अंतर करना महत्वपूर्ण होगा।" मल्लिका विरदी ने कहा, जिन्होंने वर्षों पहले माटी संगठन की शुरूआत की थी। वे आगे कहती हैं कि "महामारी अभी भी जारी है, लेकिन यह तालाबंदी था जिसने हमें प्रभावित किया।" विरदी हिमालयन आर्क की भी संस्थापक निदेशक हैं, वे वॉइसेस ऑफ़ रूरल इंडिया की सह संस्थापकों में से एक हैं। और वर्तमान में सरमोली जैंती वन पंचायत में दूसरे कार्यकाल के लिए सरपंच भी हैं।

आकस्मिक तालाबंदी के साथ साथ आय भी घटी। इसलिए यहां समुदाय ने वॉइसेस ऑफ़ रूरल इंडिया (ग्रामीण भारत की आवाज) की शुरूआत की, यह मंच भारत की पांच संस्थाओं के सहयोग से मिलकर शुरू हुआ। यह ग्रामीण आवाज की आजादी का प्रतीक है। वॉइसेस ऑफ़ रूरल इंडिया ने स्वतंत्रता दिवस के दिन होमस्टे मालिकों के लिए मंच प्रदान किया। जिसमें वे उनकी कहानियां साझा कर सकती हैं और कुछ कमाई कर सकती हैं चाहे कमाई की राशि छोटी ही हो। यह कहानियां प्रकाशित की जाएंगी, होमस्टे मालिकों को उनकी पहली कहानी के लिए 1000 रूपए, दूसरी कहानी के लिए 1500 रूपए, और तीसरी कहानी के लिए 2000 रू. दिए जाएंगे। इससे ग्रामीण पत्रकारिता को प्रोत्साहन मिलेगा।

लेकिन मौद्रिक मानदेय से आगे, वॉइसेस ऑफ़ रूरल इंडिया की सोच ग्रामीण क्षेत्र में महिला और पुरूषों को डिजीटल शिक्षा में दक्ष बनाना है। प्रत्येक प्रतिभागी संस्था को हर माह 5 कहानियों की जरूरत है और संपादक और संगठन स्वैच्छिक आधार पर काम करते हैं।

"गांव में संभावनाएं हैं पर उपकरण नहीं हैं," विरदी ने कहा। यह उम्मीद है कि डिजीटल शिक्षा और ढांचा के लिए ग्रामीण क्षेत्र के लोग शहरी लोगों के पास जाएं। उन्होंने इस दूरी को समझा और समुदाय के साथ डिजीटल केन्द्र की शुरूआत की। "जब स्कूल बंद हो गए, सभी कक्षाएं आनलाइन लगाई गईं" कंचन आर्य ने कहा। कंचन, माटी की सदस्य हैं।

"पर बहुत से बच्चों के पास मोबाइल फोन या कम्प्यूटर नहीं हैं। हमें 4 कम्प्यूटर व 1 मोबाइल फोन प्राप्त हुआ। प्रिंटर खरीदा और आनलाइन कक्षाएं लगाईं, यह हमारे डिजीटल केन्द्र से शुरू हुईं।"

इसके अलावा, महामारी का पर्यटन आधारित आय पर तत्कालीन प्रभाव पड़ा। डिजीटल शिक्षा, और स्थानीय कृषि को सामूहिकता से करने से समुदाय मजबूत हुआ। जबकि यहां बाजार पर खाद्य आपूर्ति की निर्भरता बढ़ रही है। माटी संगठन, लगातार खाद्य संप्रभुता की मुख्य सोच रखते हुए स्थानीय खाद्य उत्पादन पर जोर देता है। जिससे लोगों को जीवन निर्वहन में मदद मिली। इसके बावजूद, पर्यटन संबंधित आय में कमी आई। खाद्य उत्पादन और मिट्टी की उर्वरता निर्भर है पौष्टिक

जैव खाद पर, जो आसपास के जंगल से मिलता है। पेड़ों की सड़ी गली पत्तियां जैव खाद बनाती हैं, जिससे खेतों की मिट्टी उर्वर बनती है। यह चक्र सतत् चलता रहता है। तालाबंदी में पहाड़ी खेती-किसानी और आजीविका के साथ वनों की सुरक्षा ने वन पंचायत के महत्व को और पुष्ट किया है। "हमारे पास ऐसे किसानों का समूह है, जिनकी छोटी जोत है। इसलिए हम एक दूसरे की मदद कर सकते हैं" कमला पांडे ने कहा। जिन किसानों की खेती अलग-अलग है, वे अब मिलकर एक दूसरे की मदद कर रहे हैं और बाजार की बजाए, खुद के लिए फसलों से अनाज उगा रहे हैं। उन्होंने एक दूसरे को खाद बीज दिए। कृषि पर जोर बढ़ा है और समुदाय ने मिलकर सफलतापूर्वक इस संकट का सामना किया है। जब अचानक स्थानीय खाद्य उत्पाद और हस्तशिल्प की बिक्री पर रोक लग गई तब माटी ने स्थानीय उत्पाद जैसे जड़ी-बूटी, खाद्य सामग्री, ऊनी उत्पादन की आनलाइन बिक्री शुरू की। यह इंस्टाग्राम पेज के माध्यम से किया गया। महामारी के दौरान इसने जोर पकड़ा।

सबक

ग्रामीण पहाड़ी समुदाय के अस्तित्व के लिए स्थानीय कृषि पारिस्थितिकीय का ज्ञान महत्वपूर्ण है। सामूहिक खेती व स्थानीय स्तर पर खेती का प्रबंधन संकट का सामना करने में मददगार है। महामारी में सभी को डिजीटल शिक्षा के महत्व का एहसास हुआ है। ग्रामीण समुदाय में डिजीटल ढांचे की कमी है पर इसमें संभावनाएं हैं। डिजीटल दूरी को कम करने से ग्रामीण आवाज मजबूत हुई। पर्यटन उद्योग का अनुभव इसके नीचे की ओर जाने का है पर विकल्प भी है। डिजीटल सशक्तीकरण के माध्यम से समुदाय आधारित पर्यटन कायम रहा। इसके साथ ही स्थानीय कृषि मजबूत हो रही है। प्राकृतिक संसाधनों और सामुदायिक वनों पर भी जोर था। स्थानीयकरण और जीवन निर्वहन के लिए कृषि यह दिखाती है कि विषम और अस्थिर बाजार से मुकाबला करने की उसमें क्षमता है।

संपर्क

मल्लिका विरदी, malika.virdi@gmail.com

फोटो सौजन्य बीना नितवाल

6. स्पीति के लोग

महामारी का सामना स्पीति ने किया स्वशासन से

फोटो सौजन्य सोनम तारगे, सीपीएमएसडी के सदस्य

स्पीति, हिमालय की ऊंची पहाड़ियों में उत्तर-पूर्वी हिमाचल प्रदेश में स्थित है। यह जनजाति आबादी का घर है। और यह जनजातियां कृषि और पर्यटन आधारित आजीविका पर निर्भर हैं। हाल के वर्षों में स्पीति की कृषि से जुड़ी जनजाति आबादी उसके जीवन-निर्वाह के लिए नकदी फसलों की ओर मुड़ी है। नकदी फसलों की खेती बाजार आधारित है। और बाहरी दुनिया से जोड़ती है। पर्यटन आधारित आजीविका, जो इस क्षेत्र में आम बात है, की जरूरत भी सीमा पार से संपर्क की है। हालांकि जब महामारी की शुरूआत हुई, तब सभी समुदायों ने अपने आप ही तालाबंदी कर ली। इससे न केवल कृषि पद्धति बदली बल्कि आजीविका और जीवनशैली भी बदल गई।

महामारी का परिणाम

सबसे पहले जब महामारी का हमला हुआ, तब स्पीति के दूरदराज, अगम्य व वंचित इलाकों की स्थिति और खराब हुई। क्योंकि वहां अल्प संसाधन व अल्पविकसित ढांचा है। ग्रामीणों को जल्द ही एहसास हो गया, जो दिशानिर्देश, नियम और नीतियां पूरे देश में लागू थीं,वह यहां के लिए पर्याप्त नहीं है।

यहां स्थानीय लोगों के स्वास्थ्य, आजीविका, खाद्य सुरक्षा, और उनकी बेहतरी के लिए और महामारी का सामना करने के लिए वैकल्पिक उपाय की जरूरत महसूस की गई। इसके लिए लोगों को आमंत्रित किया गया। सबने वैकल्पिक व्यवस्था की जरूरत महसूस की और स्थानीय लोगों ने स्वशासन और समुदाय के नेतृत्व से इस महामारी का सामना करने का तय किया।

स्वशासन की दिशा में पहला कदम यह उठाया गया कि एक अनौपचारिक संचालन समिति बनाई गई, जिसे कमिटी फार प्रिवेंटिव मेजरस एंड सस्टेनेबल डेवलपमेंट (CPMSD) नाम दिया गया। नागरिकों द्वारा संचालित, स्व-संगठित और स्वैच्छिक समूह, जो शासकीय ढांचे के साथ समानांतर काम कर सकेगा। इस समिति ने दो स्तर पर काम किया- एक बड़ी समिति में पंचायत प्रतिनिधि, प्रधान, महिला समूह(महिला मंडल), युवा समूह (युवक मंडल), व्यापारी समूह, स्पीति होटल व्यापारी संघ के प्रतिनिधि, होमस्टे, टैक्सी यूनियन, स्वैच्छिक संस्थाएं और गोनपास (धार्मिक संस्थान) की, कोमिक, धनकर, ताहो और कुंग्री मठ इत्यादि शामिल की गईं। बड़ी समिति ने 12 सदस्यों का एक विशेषज्ञ समिति समूह बनाया गया, जो निर्णय लेने, नेतृत्व देने और उन निर्णयों का क्रियान्वयन करेगा।

समिति के नेतृत्व में स्थानीय जनजाति आबादी ने सर्वसम्मति से निर्णय लिया कि स्वयं ही पहल कर सबसे अपने आपको अलग (आइसोलेशन) कर लेंगे और आने-जाने पर रोक लगाएंगे। और यह निर्णय देशभर में तालाबंदी घोषित होने के एक हफ्ते पहले लिया गया। यह खुद की पहल से की गई तालाबंदी विकेन्द्रीकृत थी। सभी लोगों ने इसमें सक्रिय भागीदारी की और तालाबंदी की जानकारी को गांवों में पहुंचाने में मदद की। क्षेत्र की सभी तरह की गैर जरूरी सेवाएं जैसे व्यवसाय और पर्यटन आधारित गतिविधियां इसके बाद बंद रही। जब यह प्रक्रिया मार्च मध्य से शुरू हुई थी तब कुछ अन्तरराष्ट्रीय और घरेलू पर्यटक घाटी में थे। समिति ने उनके सुरक्षित घर तक लौटने में मदद की। स्थानीय स्वैच्छिक कार्यकर्ताओं ने स्पीति घाटी के प्रवेश की निगरानी 7 महीने तक की। यानी अप्रैल से अक्टूबर (2020) तक यह काम जारी रहा।

स्पीति के कृषि आधारित समुदाय मुख्यतः नकदी फसल पर निर्भर हैं। जैसे हरी मटर, जो आजीविका का बड़ा स्रोत है। नकदी फसल का उत्पादन श्रमसाध्य है। परिवहन व बिक्री के लिए बाहरी आपूर्ति श्रृंखला पर निर्भर है। तालाबंदी के दौरान नकदी फसलों को बाहर ले जाने में समुदाय को संक्रमित होने का जोखिम था। इस बात को ध्यान में रखकर स्थानीय लोगों ने तय किया वे फसल पद्धति बदलेंगे और अपने खुद के जीवन-निर्वाह व खाद्य सुरक्षा के लिए खेती करेंगे।

यहां कई अलग-अलग गांव के लोगों ने पारंपरिक फसल जैसे काला मटर और बारली बोई। हरी मटर की जगह उन्होंने पारंपरिक फसलों को अपनाया। यह फसलें, यहां की कृषि

फोटो सौजन्य सोनम तारगे, सीपीएमएसडी के सदस्य

पारिस्थितिकीय के लिए उपयुक्त हैं, सूखा प्रतिरोधी भी हैं। "यह हमारी खेती पद्धति में स्थायी महत्व का बदलाव था। इस वर्ष पारंपरिक फसलों की फिर से वापसी हो गई। काजा, यहां एक बड़ा गांव है। यहां इस वर्ष लगभग हरी मटर नहीं बोई गई, क्योंकि यह हमारा सामूहिक निर्णय था," दोलकर ने कहा, वे स्थानीय महिला मंडल प्रतिनिधियों में एक हैं।

समिति इस मुद्दे पर महामारी से आगे भी दीर्घकालीन समय तक काम करने की सोच रखती है। वह परस्पर एक दूसरे से जुड़े सामाजिक आर्थिक मुद्दों पर काम करेगी। जैसे स्वास्थ्य, आजीविका और नागरिकों से जुड़े मुद्दों पर महामारी के बाद भी काम करती रहेगी। " हमारा इरादा महामारी के बाद भी काम जारी रखने का है, और हम मौजूदा ढांचे के समानांतर अपने कर्त्तव्यों का पालन करते रहेंगे।" सोनम तारगे ने कहा, वे समिति (CPMSD) के प्रतिनिधियों में से एक सदस्य हैं। उन्होंने कहा "स्थानीय लोगों ने समिति के काम पर अत्यधिक भरोसा दिखाया है, इसे भविष्य में जारी रखने की जरूरत है।"

सबक

महामारी की चुनौतियों का सामना, विकेन्द्रीकरण के साथ स्थानीय स्वशासन से प्रभावी तरीके से किया जा सकता है। स्थानीय समुदाय ने पारंपरिक ज्ञान के इस्तेमाल के साथ, विक्रेन्द्रीकृत निर्णय प्रक्रिया के माध्यम से यह साबित कर दिया कि वह इससे लड़ने की प्रभावी पद्धति है। बाजार आधारित कृषि नहीं, पारंपरिक कृषि पद्धति ही स्व निर्वाह यानी स्वावलंबी हो सकती है।

संपर्क

चेमी ल्हामो chemi5lhamo@gmail.com or chemi@ncf.india.org
मोबाइल नं. 7982943928

फोटो सौजन्य सोनम तारगे, सीपीएमएसडी के सदस्य

7. पीपल्स साइंस इंस्टीट्यूट

उत्तराखंड की महिलाओं ने किया जलस्रोतों को पुनर्जीवित

फोटो सौजन्य भगवती पांडे, पीएसआई

पीपल्स साइंस इंस्टीट्यूट, एक गैर लाभ शोध व विकास संगठन है। वह बड़े पैमाने पर समुदाय के नेतृत्व में जल संभरण आधारित आजीविका विकास, पर्यावरणीय गुणात्मक निगरानी, आपदा सुरक्षित मकान, और उपयुक्त तकनीक का प्रचार-प्रसार करता है। यह देश भर में सभी जगह फैला हुआ है, पर विशेष जोर हिमालय के उत्तराखंड व हिमाचल प्रदेश में है।

पी.एस.आई. मिशन से गरीबों के सशक्तीकरण के माध्यम से गरीबी उन्मूलन में मदद मिलती है, उपलब्ध मानव व प्राकृतिक संसाधन के उत्पादक, टिकाऊ और बराबरीपूर्ण इस्तेमाल से इसे किया जा सकता है। इस लक्ष्य को हासिल करने के लिए समुदाय व संस्थाओं को तकनीकी और प्रबंधकीय सहायता दी जाती है। और विकास कार्यक्रम का क्रियान्वयन किया जाता है। जनहित में शोध व नीतियों का विश्लेषण किया जाता है।

महामारी का परिणाम

जब तालाबंदी की शुरूआत हुई, संस्था ने तत्काल राहत कार्य शुरू किया। गेहूं आटा, तेल, दाल, साबुन, डिटर्जेंट, सेनेटरी पेड, चायपत्ती आदि जरूरी चीजें वितरित कीं। हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड के 70 गांवों व 10 शहरी झुग्गी बस्तियों में राहत सामग्री वितरित कीं, जिसमें उत्तराखंड के बागेश्वर, देहरादून, पौड़ी, रूद्धप्रयाग, नैनीताल, अल्मोड़ा, पिथौरागढ़ और हिमाचल के सालोन शामिल थे। प्रवासी मजदूरों के लिए क्वारंटीन में सहयोग दिया गया। उनकी प्रयोगशाला में सेनेटरी पेड भी बनाए और दूरदराज गांवों में मास्क के साथ इन्हें वितरित किया। संस्था ने कृषि करनेवाले परिवारों व प्रवासी मजदूरों के बीच महामारी से बचाव जैसे दो गज दूरी, मास्क आदि के बारे में सफल जागरूकता अभियान चलाया।

फोटो सौजन्य भगवती पांडे, पीएसआई

संस्था ने प्रभावित क्षेत्र के लोगों की मदद की। विशेष तौर पर उन लोगों की जिनकी आजीविका प्रभावित हुई, उनका सहयोग किया। कोविड-19 में हिमालय राज्यों का कृषि क्षेत्र जबरदस्त ढंग से प्रभावित हुआ। पीएसआई टीम ने तत्काल आंकलन करके महसूस किया कि कृषि गतिविधियों में विशेषकर थ्रेसिंग में रूकावट आई। क्योंकि तालाबंदी में रबी फसल के दौरान मशीन व परिवहन उपलब्ध नहीं थे, उनकी आवाजाही पर रोक थी।

इसे ध्यान में रखकर पीएसआई टीम ने इसमें हस्तक्षेप किया। और कटाई के बाद थ्रेसिंग व खरीद-बिक्री में 300 परिवारों की मदद की। उत्तराखंड के रूद्धप्रयाग व बागेश्वर जिले में खरीफ मौसम के लिए बीजों की उपलब्धता सुनिश्चित की। मक्का, दलहन और धान के लगभग 3 क्विंटल बीज का प्रबंध किया।

उत्तराखंड में पीएसआई का सबसे ज्यादा प्रेरणादायक काम पानी संकट का सामना करना और पानी प्रबंधन का था, जो महामारी के दौरान भी जारी रहा। नीति आयोग व ए.सी.क्यू.यू.ए.डी.ए.एम (ACQUADAM) द्वारा प्रकाशित स्प्रिंग एटलस से पीएसआई ने विशेषकर उनके क्षेत्र की जानकारी हासिल की। मुख्य कार्यक्षेत्र पौड़ी, गढ़वाल, नैनीताल, पिथौरागढ़ और अल्मोड़ा था। यहां समुदाय की विशेष भूमिका है, समुदाय को आंकड़े उपलब्ध कराए गए और जलस्रोतों को पुनर्जीवित करने की जरूरत बताई। यहां पानी की मात्रा व गुणवत्ता दोनों पर जोर देने की जरूरत है। अगला कदम संकटग्रस्त जलस्रोत इलाके में जलविज्ञान संबंधी और सामाजिक-आर्थिक सर्वे करना था।

इसके बाद समुदाय को संगठित करना शुरू किया। नुक्कड़ नाटक, स्थानीय भाषा में लोकगीत के जरिए जागरूकता फैलाई। और लोगों से पूछा कि अगर वे तैयार हैं तो पानी के संकट के समाधान के लिए जलस्रोतों को पुनर्जीवित किया जाए। पानी इस्तेमाल करनेवालों का समूह बनाया, जिसमें महिला और पुरूष दोनों शामिल हुए। और उन्हें जलस्रोतों की देखभाल करने के लिए प्रशिक्षण दिया। सोच यह थी कि इसके माध्यम से महिला पुरूषों की आय हो और वे निर्णय लेने में सक्षम हों। प्रशिक्षित भूविज्ञानी, इंजीनियर और समाजविज्ञानियों ने जलस्रोतों के पुनर्जीवन के लिए ढांचे का खाका बनाया। पारिस्थितिकीय तंत्र के मुताबिक इसके उपाय किए जाएं, यह तय किया। इसमें समुदाय की निर्णय प्रक्रिया में बराबरी की भागीदारी हो। जलस्रोत बनाएं और उनकी देखरेख करें।

मानसून के दौरान महामारी ने प्रशिक्षण को कठिन बनाया, जो जलस्रोतों के पुनर्भरण का सबसे महत्वपूर्ण समय होता है। लेकिन वाट्सएप और जूम के जरिए लगातार जलस्रोत पुनर्भरण का प्रशिक्षण दिया गया। जलस्रोत पुनर्भरण की तकनीक को प्रशिक्षित इंजीनियर, भूविज्ञानी और समाजविज्ञानी आदि विशेषज्ञों ने सिखाया। समुदाय के लोगों को उन्होंने सरल तरीके से वीडियो व फोटोग्राफ के माध्यम से समझाया। इससे समुदाय के लोगों का क्षमतावर्धन हुआ, उनका विश्वास भी बढ़ा। विशेषकर महिलाओं ने इसमें उत्साह से भाग लिया। यहां ध्यान देने योग्य बात यह है कि

अक्सर यह तकनीकी और खाका तैयार करने का काम या पुरूष करते हैं या विशेषज्ञ। लेकिन ऐसे कठिन समय में तकनीकी और संचार के नए तरीके के कारण ग्रामीण महिलाओं में यह ज्ञान व कौशल हस्तांतरित करना संभव हुआ। महामारी में महिलाएं सबसे ज्यादा वंचित तबका था। क्योंकि उन्होंने पुरूषों की अपेक्षा ज्यादा रोजगार खोया और उन तक आभासी शिक्षा की पहुंच भी कम थी। पुरूष वर्चस्व तकनीक मानी जानेवाले स्थान को महिलाओं ने भरा। आभासी शिक्षा व प्रशिक्षण में उनकी भागीदारी, व्यस्तता बहुत महत्वपूर्ण मानी जा सकती है।

सबक

समुदाय के लोगों में प्रशिक्षण व आभासी प्रशिक्षण से भी एक अलग तरह का विश्वास पैदा होता है। क्षमतावर्धन और कौशल विकसित होता है। जिससे समुदाय द्वारा जलस्रोतों को पुनर्जीवित किया गया और पानी संकट को दूर किया गया। आभासी प्रशिक्षण के माध्यम से महिलाओं में पुरूष वर्चस्व वाले माने जानेवाले स्थान को हासिल किया और इससे उनका आत्मविश्वास बढ़ा।

संपर्क

रोशन राठौड़, roshi.rathod@gmail.com and psiddoon@gmail.com

फोटो सौजन्य भगवती पांडे, पीएसआई

8. स्नो लेपर्ड कन्ज़र्वेंसी सहयोग मेरु और हनुपट्टा के गांवों में

प्रवासी मजदूर व महिलाओं की टिकाऊ जीवन की राह

फोटो सौजन्य संगे भूटिया

स्नो लेपर्ड कन्ज़र्वेंसी - भारत ट्रस्ट (SLC-IT) एक संगठन है, जो हिम तेंदुआ की सुरक्षा व उसे बेहतर ढंग से समझने में मदद करता है। हिमालय की मध्य व दक्षिण एशिया की ऊंची चोटियों की ऊबड़-खाबड़ जमीन में इस बड़ी बिल्ली की प्रजाति का निवास है। इस संस्था की स्थापना वर्ष 2009 में हुई, जो लद्दाख क्षेत्र में सक्रिय है और समुदाय आधारित संरक्षण की पहल करती है।

प्रत्येक वर्ष यह संस्था (SLC-IT) लद्दाख के कई गांवों की महिलाओं को प्रशिक्षण देती है। हनुपट्टा, मेरू, हिमय और लमयेरू आदि गांवों में हस्तशिल्प और हथकरघा गतिविधि का प्रशिक्षण दिया जाता है। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य है ग्रामीण महिलाओं को सशक्त करना और उनको आय के स्रोत उपलब्ध कराना। इस प्रशिक्षण के माध्यम से स्थानीय समुदाय की पारंपरिक कला और शिल्प को बढ़ावा दिया जा रहा है। इस हस्तशिल्प को बेचने से जो आय हो रही है, वह जो नुकसान पशुओं व हिम तेंदुआ से हो रहा है, उसकी पूर्ति करने में मददगार है।

महामारी का परिणाम

कोविड-19 के दौरान जब तालाबंदी लागू हुई तो संस्थान को शुरूआती प्रशिक्षण रद्द करना पड़ा। लेकिन इन गांवों की महिलाएं एसएलसी पहुंची और उन्होंने सूखी सुई फेल्टिंग (ड्राई नीडल फेल्टिंग) सिखाने की मांग की, जो पहले कभी नहीं की थी। सूखी सुई फेल्टिंग, हस्तकला का एक तरीका है, जिसमें सुई और ऊन की मदद से 3-डी आकार बनाया जाता है। तालाबंदी के दौरान यहां की महिलाएं कुछ उत्पादक काम करना चाहती थीं। और अगले पर्यटन मौसम के लिए अपने उत्पाद बेचना चाहती थीं।

फोटो सौजन्य जिग्मेट डैडिल

फोटो सौजन्य अनजारा अंजुम

महिलाओं ने तालाबंदी के बीच में एसएलसी को प्रशिक्षण देने के लिए प्रेरित किया। अतिरिक्त सावधानी व बचाव के साथ प्रशिक्षण सफलतापूर्वक आयोजित हुआ।

आश्चर्यजनक रूप से, कोविड-19 के पहले वर्षों की अपेक्षा, इस वर्ष ज्यादा महिलाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। महिलाओं के अलावा, प्रवासी युवा, जो तालाबंदी में घर वापस लौटे थे, उन्होंने भी इसमें भाग लिया।

जब तालाबंदी में लेह और आसपास के बाजार तक आवाजाही पर रोक थी, महिलाओं ने सूखी सुई फेल्टिंग के लिए कच्चा माल एकत्र कर लिया था। जैसे उन्होंने उनके स्थानीय भेडों से और घरेलू सुरा गाय (यक) से ऊन लिया। महिलाएं किसी भी तरह के कच्चे माल के लिए बाजार पर निर्भर नहीं थीं, और उन्हें सभी तरह की सुईयां, जो उन्हें शिल्पकला के लिए चाहिए थीं, बिना बाजार जाएं, मिल सकीं।

हाल के वर्षों में लद्दाख के जीवन में बाजार की निर्भरता बढ़ती जा रही है। इसका एक असर तालाबंदी में देखने में आया जब सब्जियों की आपूर्ति रुक गई। तालाबंदी कई मायनों में आंख खोलनेवाली थी। इसमें इस सोच को मान्यता मिली कि पहाड़ में कई तरह के गैर कृषि खाद्य-कंद मूल, औषधीय जड़ी-बूटी, फल और सब्जियां हैं। सूखी सुई फेल्टिंग प्रशिक्षण के अलावा, हिमया गांव की महिलाओं ने बताया कि पहाड़ में जड़ी-बूटियां व वैकल्पिक सब्जियां हैं। इन महिलाओं ने पहाड़ से औषधीय जड़ी-बूटी और सब्जियों एकत्र करने में मदद की। महिलाएं अपने परिवार का बहुत ही कम खर्च में निर्वहन कर सकती हैं और यही स्वस्थ व टिकाऊ जीवन की राह भी है।

सबक

योजना से वर्तमान ही भविष्य बनता है, इसलिए हमें इस दिशा में काम करना चाहिए। महिलाओं ने तालाबंदी के दौरान उनके समय का उपयोग करके उत्पादन किया, जिसे वे अगले पर्यटन मौसम में बेच सकेंगी। इसके लिए उन्होंने बाहरी निवेश भी नहीं किया। महिलाओं ने स्थानीय ज्ञान का इस्तेमाल किया। कृषि पारिस्थितिकीय के लिए अनुकूल, व एक टिकाऊ जीवन की राह दिखाई।

संपर्क

अनजारा अंजुम, anzaraa@gmail.com

9. कांगड़ा की किशोरी लड़कियां

महामारी में किशोरी लड़कियों की कहानियां

फोटो सौजन्य जागोरी ग्रामीण

कोविड-19 महामारी ने साफ कर दिया कि अलग-अलग समूहों के लिए इसके मायने अलग-अलग हैं। आर्थिक रूप से वंचित लोगों के लिए इसके मायने बिलकुल भिन्न हैं। इसका नतीजा है कि लोगों ने इस दौरान असमानता महसूस की। जैसे जाति, वर्ग, लिंग आदि पहचान के आधार भेदभाव दिखाई दिया। इस संदर्भ में किशोर लड़कियों का मामला दिलचस्प व जुदा है। उन्हें स्वास्थ्य के बारे में कई मुश्किलों का सामना करना पड़ा। लड़कों की अपेक्षा लड़कियों में खून (आयरन) की कमी और कुपोषण ज्यादा है। युवतियां और महिलाएं पहले ही हाशिये पर हैं और महामारी ने उनकी स्थिति को खराब कर दिया। उनका बहुत कुछ खोने का जोखिम बढ़ गया। सबसे अधिक जरूरी के नाम पर लड़कियों के अधिकारों में जो प्रगति हुई है, उसको खोने की आशंका बढ़ गई। उनके स्वास्थ्य, सुरक्षा और साथियों के सहयोग का संकट पहले से ही है।

हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा जिले के समुदायों के साथ जागोरी (जागोरी रूरल चेरिटेबल ट्रस्ट) सभी तरह के भेदभावों के खिलाफ काम करती है। जैसे लिंग, वर्ग,धर्म, विकलांग और अन्य सभी तरह के सामाजिक बहिष्करण के मुद्दों पर काम करती है। किशोरी लड़कियों के न्याय के लिए कार्यक्रम (AAGAJ) इस मुद्दे पर जागरूकता लाने का हिस्सा है। संस्था की मान्यता है कि किशोर लड़कियां सबसे ज्यादा वंचित व असुरक्षितों में एक हैं, कोविड-19 में उन पर प्रभाव पड़ा है। जब तालाबंदी की शुरूआत हुई, संस्था ने उनके पास पहुंचने की पहल शुरू की। कांगड़ा जिले के चार विकासखंड- रैत, नगरोटा सूरिया, धर्मशाला और कांगड़ा में यह पहल की गई।

महामारी का परिणाम

किशोरी लड़कियों को उनके दोस्तो, साथियों के समूह और सामूहिकता से काफी मदद मिलती है। लेकिन जब तालाबंदी की शुरूआत हुई तब सब अलग-थलग हो गए। कई खबरें ऐसी भी

आईं जिनमें युवतियों को यौन हिंसा का सामना करना पड़ा जब वे घरों में थीं, या जब सड़कें पूरी तरह सूनी थीं। तालाबंदी गवाह है जब इस दौरान लड़कियों, बच्चे और महिलाओं का हिंसा के कारण तनाव बढ़ा। चाइल्डलाइन इंडिया के पास अप्रैल माह में 11 दिनों में ही 92,000 फोन आए।

जब पारिवारिक आय में कमी आई, युवा लड़कियां और वंचित हो गईं। उन्हें स्कूल और कालेज छोड़ना पड़ा, जिससे शिक्षा में लिंगभेद की खाई और बढ़ी। यहां लिंगभेद का पहलू डिजीटल भी था। लड़कियों के पास फोन कम थे या इंटरनेट तक पहुंच भी मुश्किल थी। यह स्थिति कांगड़ा में अलग नहीं थी। तालाबंदी ने लड़कियों की पारिवारिक जिम्मेदारी बढ़ा दी थी, फसल कटाई के साथ उनकी पढ़ाई भी पिछड़ रही थी। जल्दी शादी और बाल विवाह के मौके बढ़ गए थे और तालाबंदी में आनलाइन पढ़ाई में बहुत चुनौतियां थी। युवा लड़कियों के बीच शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य का मुद्दा भी मुख्य था। जहां अधिकांश युवा लड़कियां और महिलाएं खून की कमी से पीड़ित हों, उनकी पोषण तक पहुंच में कमी स्थिति को और खराब करेगी और पारिवारिक आय को कम करेगी और जीवन स्तर और गिरेगा।

"मैंने 12 वीं कक्षा तक पढ़ाई पूरी कर ली है। मैं आगे की पढ़ाई करना चाहती हूं पर मेरे गांव से कालेज दूर है।" वंदना ने कहा, वह इस क्षेत्र की युवा वयस्क है। वह आगे कहती है कि "अगर मैं लड़का होती तो मेरे माता-पिता मुझे उच्च शिक्षा की अनुमति दे देते। मैं इस साल आगे की पढ़ाई के लिए प्रवेश लेना चाहती हूं, पर महामारी के दौर में यह दिखाई देता है कि मैं कभी कालेज नहीं जा पाऊंगी।"

15 वर्षीय शिखा कहती है कि "घर में पढ़ाई बहुत चुनौतीपूर्ण है। मेरे दो छोटे भाई बहन हैं, दिन में उनकी पढ़ाई में मदद करती हूं और घर के सभी काम करती हूं। खेती-किसानी के यहां बहुत काम हैं, उनको करती हूं। इसलिए, जब सभी काम कर लेती हूं तो रात्रि 9 बजे के बाद ही कुछ समय अपनी पढ़ाई कर पाती हूं।"

तालाबंदी ने मासिक धर्म उत्पादों के उत्पादन और आपूर्ति को भी बाधित किया है। "पहले मैं अपने सेनेटरी कपड़े घर के पास की नदी में धोती थी," ज्योति ने कहा। वह आगे कहती है कि "पर तालाबंदी के कारण गांव के लोग हमेशा ही नदी के आसपास होते हैं। वहां जाने में और नहाने व कपड़े धोने में मुझे बहुत कठिनाई होती है, विशेषकर सेनेटरी कपड़े। सेनेटरी कपड़े

फोटो सौजन्य जागोरी ग्रामीण

धोने के दौरान जब लोग वहां होते हैं तब मैं बहुत डरी हुई महसूस करती हूं। इसलिए मैं बहुत सुबह जागती हूं और 5 बजे के आसपास नहाती हूं।"

युवा लड़कियों के पोषण की जरूरतों पर जागोरी काम कर रही है। संस्था ने एक पोषण किट बनाई है जिसमें नेपकिन पैकेट है, इससे उनकी पोषण की जरूरतें व मासिक धर्म की चुनौतियों को हल करने में मदद मिलेगी। प्रत्येक किट में एक पत्र शामिल है जिसमें अनिवार्य रूप से हेल्पलाइन नंबर भी होता है, जहां वह घरेलू दुर्व्यवहार के मामले होने पर संपर्क कर सकती हैं। किशोरी लड़कियों को कुल 780 पोषण पैकेट और सेनेटरी पेड दिए गए। युवा लड़कियों को मानसिक, शारीरिक स्वास्थ्य और अच्छी सेहत और घरेलू दुर्व्यवहार के बारे में भी जागरूक किया गया।

आगे के लिए सबक

युवा लड़कियों का सवाल अलग नहीं है, वह बड़े संकट का हिस्सा है। लेकिन इस अतिसंवेदनशील व वंचित तबके को गहराई से समझने की जरूरत है। अन्य संकटों की तरह यह संकट भी है। लेकिन युवा लड़कियों का संघर्ष व्यक्तिगत व सामाजिक दोनों तरह से बड़ा है। परिवार में पितृसत्तात्मक सोच का मुद्दा चुनौतीपूर्ण है। जहां उन्हें पोषण का अभाव, शिक्षा का अभाव और घरेलू हिंसा का सामना करना पड़ता है। इन सभी मुद्दों पर हमने पहल की है। हम उनके साथ हैं, हमारा जवाब है कि हमने युवा लड़कियों के लिए एक केन्द्र बनाया है,जहां उनकी जरूरतों को समझने की कोशिश की जा रही है। और यह लड़कियों,बच्चे और युवा वयस्कों सबके लिए है।

संपर्क

अरकीना सिंह, arkina98@gmail.com
सुहासिनी बाली, balisuhasini@gmail.com
जिला प्रोजेक्ट समन्वयक, आगाज, प्रोजेक्ट, जागोरी ग्रामीण

फोटो सौजन्य जागोरी ग्रामीण

10. पर्यावरणीय पर्यटन के रूप में कश्मीर के पक्षी

बर्ड्स ऑफ़ कश्मीर बने पर्यटन व टिकाऊ आजीविका का माध्यम

फोटो सौजन्य इरफान जिलानी

हाल के वर्षों में पक्षी निरीक्षण और पर्यावरणीय पर्यटन एक वैकल्पिक वाणिज्यिक पर्यटन के रूप में सामने आया है। संयुक्त राष्ट्र की पर्यावरण एजेंसी ने पर्यटन उद्योग में पक्षी निरीक्षण की सार्थक भूमिका को माना है। इसके साथ ही स्थानीय समुदायों और विकासशील देशों को इससे प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से आर्थिक लाभ हैं। कश्मीर में समुदाय और पर्यावरण के अनुकूल पर्यटन उद्योग की बहुत संभावनाएं हैं। तालांबदी के दौरान इस दिशा में शुरूआत हुई है। भारत के प्रसिद्ध पक्षी विज्ञानी सालिम अली ने एक बार कहा था "प्रवासी पक्षियों के लिए कश्मीर स्वर्ग है"। कश्मीर की जलभूमि हर साल मिलियन प्रवासी पक्षियों की अस्थाई परिसर होती है।

तालाबंदी के दौरान बड्र्स ऑफ़ कश्मीर (बीओके) की स्थापना इरफान जिलानी ने की। इसका उद्देश्य पक्षी प्रेमियों और जो पक्षियों और उनके पर्यावास से परिचित होना चाहते हैं, ऐसे पर्यटकों को आकर्षित करना है। पर्यावरणीय पर्यटन व टिकाऊपन आधारित आजीविका तलाशना है।

32 वर्षीय जिलानी पक्षी प्रेमी हैं, जो कश्मीर के गांदरबल के कंगन कस्बे के निवासी हैं। उनकी हमेशा ट्रेकिंग (दुर्गम पदयात्रा) में रूचि रही है। और वे कश्मीर में कई ट्रेकिंग समूहों के साथ दुर्गम पदयात्राओं में गए हैं। "जब मैं ट्रेकिंग में जाता था, तब प्रकृति का अवलोकन करता और फोटो खींचता," जिलानी ने कहा। उन्होंने आगे कहा-"इसके बाद फोटो लेना मेरा जुनून सा बन गया। मैंने पेड़-पौधों व जीव-जंतुओं के बारे में पढ़ना शुरू किया पर निराश हुआ। मैंने पाया कि स्थानीय लोगों ने इस पर ज्यादा शोध नहीं किया, जो भी शोध उपलब्ध है, वह सभी विदेशी शोधकर्ताओं ने किया है।"

फोटो सौजन्य इरफान जिलानी

जिलानी ने सोशल मीडिया पर फोटो डालना शुरू किया। उन्होंने कश्मीर घाटी की 243 प्रजातियों के पक्षियों की फोटो पोस्ट की, जिन्होंने राष्ट्रीय व अन्तरराष्ट्रीय पक्षीप्रेमियों व विशेषज्ञों का ध्यान खींचा। इनमें से एक सरवन दीप सिंह थे, जिनके साथ जिलानी ने बाद में काम किया और अलग-अलग तकनीकें सीखी।

महामारी का परिणाम

जब महामारी का हमला हुआ, तब सभी घरों में रहने को मजबूर हो गए। पर्यटन क्षेत्र के लिए तालाबंदी बहुत कठिनाई भरा समय था और उन समुदायों के लिए भी जिनकी आजीविका इससे चलती थी। युवा उनके भविष्य के लिए अनिश्चित थे और बेरोजगारी बढ़ी थी। उस समय जिलानी ने *छज्जे से पक्षी निरीक्षण और घर के पीछे आंगन से पक्षी निरीक्षण* की शुरूआत की। मेरा उद्देश्य दर्शकों का ध्यान खींचना और उन्हें क्षेत्र के पक्षियों व उनके पर्यावास से परिचित करवाना है। उन्होंने कहा- "यह बहुत अनोखा मौका देता है कुछ अलग फोटो खींचने और सोशल मीडिया पोर्टल पर पोस्ट करने का।" इस सोच से अंत में एक क्लब बना, जिसका नाम कश्मीर के पक्षी (बड्र्स ऑफ़ कश्मीर, BOK) है।

जिलानी इसे कश्मीर तक ही सीमित नहीं रखना चाहते थे, क्योंकि इसमें कम भागीदारी होती। उनका विचार इसे बड़ा समूह बनाने का था, जिसमें युवा उनके काम का प्रदर्शन कर सकें और क्षेत्र के जानकार बने। इसमें वे सफल हुए। आज कश्मीर के पक्षी समूह के कई देशों से 4 हजार सक्रिय सदस्य हैं।

बीओके का विस्तार हुआ। जिलानी के पास कई पक्षी प्रेमियों के फोन पक्षी निरीक्षण के लिए आए। उन्होंने इसमें युवाओं के लिए टिकाऊ आय आजीविका का मौका देखा। जिलानी ने 30-40 युवाओं को प्रशिक्षण दिया, पर्यटकों के व्यक्तिगत मार्गदर्शक (गाइड) बने। और युवाओं के लिए इस काम के लिए पर्यटकों ने भुगतान किया।

"कश्मीर की पहचान समृद्ध जैव विविधता की है, इसमें बड़ी संख्या में पक्षियों की प्रजातियां भी शामिल हैं, इनमें से कुछ कश्मीर की अनूठी प्रजातियां हैं," जिलानी ने कहा। उन्होंने आगे कहा कि "बीओके के विस्तार के बाद हमें पक्षी निरीक्षण व प्रकृति यात्रा के बहुत सारे अनुरोध आए, जो नजरिया यूरोप में उभरा है। बाद में हमने पर्यावरण के अनुकूल प्रकृति यात्रा की शुरूआत की। जिसमें पक्षी प्रेमियों को पक्षियों की अनोखी दुनिया के पास तक ले गए। बाद में यह इस क्षेत्र के लोगों की आय का माध्यम बना। टिकाऊ आय के बावजूद भी, महामारी के कारण बीओके ने पर्यटकों की सीमित संख्या रखी। यह बाद में यह पर्यावरणीय टिकाऊ रोजगार पैदा करने का बड़ा माध्यम बन सकता है।"

सबक

महामारी के दौरान कठिनाई के बावजूद टिकाऊ रोजगार और आयवर्धन संभव है। स्थानीय युवा और समुदायों को उनके स्थानीय ज्ञान के साथ इस काम में लगाया जा सकता है। और इस स्थानीय ज्ञान को हस्तांतरित कर, समुदाय व पर्यावरण के अनुकूल पर्यटन को बढ़ाया जा सकता है। इसमें वहन क्षमता को ध्यान में रखना भी जरूरी है।

फोटो सौजन्य इरफान जिलानी

इस दस्तावेज का संकलन ऋतविका पतगिरी और आद्या सिंह ने किया है। सुजाता पद्मनाभन, रोशन राठौड़, संजय सोंधी, शेख घुलाम रसूल, त्सेवान्ग नामग्याल, सृष्टि वाजपेयी, ताशी मोरुप, आभा भैया, बीजू नेगी आदि सभी का उनके सहयोग के लिए विशेष रूप से धन्यवाद देना जरूरी है। अनजारा अंजुम, मल्लिका विरदी, अनीता पाल, कल्याण पाल, इरफान जिलानी, आदर्श कृष्णन, लुबना कादरी, आसिफ अहमद, अरकीना, सुहासिनी बाली, चेमी ल्हामो, रेखा रौतेला, बीना नितवाल, कमला पांडे, कंचन आर्या, पुष्पा सुमतियाल, टुंडप दोरजे, केसर सिंह, तोकीर आलम लोढा और सुनीता कश्यप आदि सभी के सहयोग के बिना यह दस्तावेज बनना संभव नहीं है, इसलिए इन सभी का धन्यवाद। डिजाइन और साज-सज्या का संयोजन नवीद दादन ने किया है तथा हिंदी अनुवाद बाबा मायाराम ने किया है।

प्रकाशन के लिए सहयोग हेनरिक बोएल फाउंडेशन और मिसेरियोर ने किया है।

साधारण लोगों के असाधारण कार्य, की पूरी श्रृंखला का समन्वय अशीष कोठारी, ashishkothari@riseup.net

उद्धरणः विकल्प संगम, *पश्चिमी हिमालय में महामारी से मुकाबला*, खंड-3 *साधारण लोगों के असाधारण कार्य, महामारी व तालाबंदी से परे*, विकल्प संगम का मुख्य समूह, पुणे, फरवरी 2021

यह प्रकाशन कापीलेफ्ट प्रकाशन है। यह गैर वाणिज्यिक उद्देश्यों के लिए स्वतंत्र रूप से पुनर्प्रकाशन किया जा सकता है। बेहतर होगा कि श्रेय एवं उद्धरण के साथ, और कोई भी पुनर्प्रकाशन समान शर्तों के साथ और बिना किसी कापीराइट के होना चाहिए।

श्रृंखला के पहले दो खंड कई भाषाओं और ग्राफिक में उपलब्ध हैं।

'साधारण' लोगों के असाधारण कार्य : खंड 1, ग्राफिक उपन्यास

सामुदायिक वन अधिकार और महामारीः ग्रामसभा ने दिखाई राहः खंड 2, ग्राफिक उपन्यास

विकल्प संगम, मानव और पारिस्थितिक कल्याण के लिए न्यायसंगत, समतापूर्ण और टिकाऊपन के रास्ते पर काम करनेवाले आंदोलनों, समूहों और व्यक्तियों को एक साथ लाने का एक मंच है। यह विकास के वर्तमान माडल और इसकी असमानता और अन्याय की संरचनाओं को खारिज करता है, और व्यवहार और दृष्टिकोण में विकल्पों की खोज करता है। देशभर के लगभग 70 आंदोलन और संगठन इसके कोर ग्रुप के सदस्य हैं।

अधिक जानकारी के लिए कृपया देखेः
http://www.vikalpsangam.org/about/

Alternatives India
VIKALP sangam
www.vikalpsangam.org

- ACCORD (Tamil Nadu)
- Alliance for Sustainable and Holistic Agriculture (national)
- Alternative Law Forum (Bengaluru)
- Ashoka Trust for Research in Ecology and the Environment (Bengaluru)
- BHASHA (Gujarat)
- Bhoomi College (Bengaluru)
- Blue Ribbon Movement (Mumbai)
- Centre for Education and Documentation (Mumbai)
- Centre for Environment Education (Gujarat)
- Centre for Equity Studies (Delhi)
- CGNetSwara (Chhattisgarh)
- Chalakudypuzha Samrakshana Samithi / River Research Centre (Kerala)
- ComMutiny: The Youth Collective (Delhi)
- Deccan Development Society (Telangana)
- Deer Park (Himachal Pradesh)
- Development Alternatives (Delhi)
- Dharamitra (Maharashtra)
- Ekta Parishad (several states)
- Ektha (Chennai)
- EQUATIONS (Bengaluru)
- Extinction Rebellion India (national)
- Gene Campaign (Delhi)
- Goonj (Delhi)
- Greenpeace India (Bengaluru)
- Health Swaraaj Samvaad (national)
- Ideosync (Delhi)
- Jagori Rural (Himachal Pradesh)
- Kalpavriksh (Maharashtra)
- Knowledge in Civil Society (national)
- Kriti Team (Delhi)
- Ladakh Arts and Media Organisation (Ladakh)
- Local Futures (Ladakh)
- Maadhyam (Delhi)
- Maati (Uttarakhand)
- Mahila Kisan Adhikar Manch (national)
- Mahalir Association for Literacy, Awareness and Rights (MALAR)
- Mazdoor Kisan Shakti Sangathan (Rajasthan)
- National Alliance of Peoples' Movements (national)
- Nirangal (Tamil Nadu)
- North East Slow Food and Agrobiodiversity Society (Meghalaya)
- People's Resource Centre (Delhi)
- Peoples' Science Institute (Uttarakhand)
- Revitalising Rainfed Agriculture Network (national)
- reStore (Chennai)
- Sahjeevan (Kachchh)
- Sambhaavnaa (Himachal Pradesh)
- Samvedana (Maharashtra)
- Sangama (Bengaluru)
- Sangat (Delhi)
- School for Democracy (Rajasthan)
- School for Rural Development and Environment (Kashmir)
- Shikshantar (Rajasthan)
- Snow Leopard Conservancy India Trust (Ladakh)
- Sikkim Indigenous Lepcha Women's Association
- Social Entrepreneurship Association (Tamil Nadu)
- SOPPECOM (Maharashtra)
- South Asian Dialogue on Ecological Democracy (Delhi)
- Students' Environmental and Cultural Movement of Ladakh (Ladakh)
- Thanal (Kerala)
- Timbaktu Collective (Andhra Pradesh)
- Titli Trust (Uttarakhand)
- Tribal Health Initiative (Tamil Nadu)
- URMUL (Rajasthan)
- Vrikshamitra (Maharashtra)
- Watershed Support Services and Activities Network (Andhra Pradesh/Telangana)
- Youth Alliance (Delhi)
- Yugma Network (national)
- Let India Breathe
- Travellers' University
- Dinesh Abrol
- Sushma Iyengar